Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

धर्मवीर भारती का कथा साहित्य का अलोचनात्तम पालन

Sunil Kumar[1]* Dr. Ved Vati[2]

[1] Research Scholar, Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu, Rajasthan

[2] Supervisor, Hindi Department, Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu, Rajasthan

सार – ***धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर 1926 को इलाहाबाद के अतर सुइया मुहल्ले में हुआ। उनके पिता का नाम श्री चिरंजीव लाल वर्मा और माँ का श्रीमती चंदादेवी था। स्कूली शिक्षा डी. ए वी हाई स्कूल में हुई और उच्च शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय में। प्रथम श्रेणी में एम ए करने के बाद डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में सिद्ध साहित्य पर शोध-प्रबंध लिखकर उन्होंने पीएच.डी. प्राप्त की। घर और स्कूल से प्राप्त आर्यसमाजी संस्कार, इलाहाबाद और विश्वविद्यालय का साहित्यिक वातावरण, देश भर में होने वाली राजनैतिक हलचलें, बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु और उससे उत्पन्न आर्थिक संकट इन सबने उन्हें अतिसंवेदनशील, तर्कशील बना दिया। उन्हें जीवन में दो ही शौक थे: अध्ययन और यात्रा। भारती के साहित्य में उनके विशद अध्ययन और यात्रा-अनुभवों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है: जानने की प्रक्रिया में होने और जीने की प्रक्रिया में जानने वाला मिजाज जिन लोगों का है उनमें मैं अपने को पाता हूँ। (ठेले पर हिमालय) उन्हें आर्यसमाज की चिंतन और तर्कशैली भी प्रभावित करती है और रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत। प्रसाद और शरत्चन्द्र का साहित्य उन्हें विशेष प्रिय था। आर्थिक विकास के लिए मार्क्स के सिद्धांत उनके आदर्श थे परंतु मार्क्सवादियों की अधीरता और मताग्रहता उन्हें अप्रिय थे। 'सिद्ध साहित्य' उनके शोध' का विषय था, उनके सटजिया सिद्धांत से वे विशेष रूप से प्रभावित थे। पश्चिमी साहित्यकारों में शीले और आस्करवाइल्ड उन्हें विशेष प्रिय थे। भारती को फूलों का बेहद शौक था। उनके साहित्य में भी फूलों से संबंधित बिंब प्रचुरमात्रा में मिलते हैं।***

----------X----------

प्रस्तावना

सृजन मनुष्य का सहज स्वभाव होता है। उसका प्रत्येक कार्य सृजन है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। वह जीवन से अनुभव - सामग्रय प्राप्त करता है। यह उसके अन्तर्जगत् में प्रभाव डालता है। कलात्मक संवेदना और अभिव्यक्ति-कुशलता से संपन्न व्यक्ति अपने मन की अनुभूतियों को साहित्य, संगीत, चित्र, अभिनय इत्यादि के जरिए प्रकट करता है। सामान्य व्यक्ति भी सर्जक-कलाकार की तरह घटनाओं का अनुभव करता है, एकाकार होकर रोता-हँसता भी है। पर उन घटनाओं को कलात्मक रूप देने की क्षमता सामान्य व्यक्ति में नहीं है। "विशिष्ट मानवीय क्षमता में कवि दूसरों से भिन्न होता है। सृजन और भाषा-प्रयोग की क्षमता उसमें ज्यादा विकसित है।" वह क्षमता केवल कवि या कलाकार में ही है। संवेदनक्षमता और अभिव्यक्ति कुशलता की न्यूनता-अधिकता के आधार पर सर्जक को साधारण अथवा श्रेष्ठ माना जाता है।

सृजनात्मक शक्ति या प्रतिमा की व्याख्या संपूर्ण रूप से संभव नहीं है। वह अव्याख्येय है। उसकी मात्रा सब सर्जकों में समान भी नहीं है। भौतिक परिस्थिति भी उसके निर्माण में पूर्ण रूप से समर्थ नहीं होती, यद्यपि उचित परिस्थिति उसके विकास के लिए आवश्यक है। सृजनात्मक शक्ति शिक्षा-दीक्षा से निर्मित होनेवाली वस्तु नहीं। पाण्डित्य और सृजनशीलता में भी बड़ा भारी संबंध नहीं है। सुप्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक जार्ज साम्पसन् के मत में "अधिक पाण्डित्य और महान सृजन-शक्ति के बीच तनिक भी संबंध नहीं है। समस्त सृजनात्मक प्रतिभा एक रहस्य है और बिलकुल व्याख्यातीत भी है।"

सृजन और आलोचन

सामान्य रूप से कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक को सृजनात्मक साहित्य कहा जाता है। आलोचना को भी कुछ विद्वान सृजनात्मक मानते हैं। स्काट जेम्स का विचार है कि – "कवियों का निर्णायक कवि ही है। सर्जक जीवन के सुख-दुख, आशा-निराशा और आकुल्ता-आकांक्षा का संश्लिष्ट चित्रण करके एक प्रतिसंसार की सृष्टि करता है। वह पाठक की संवेदना और उसके जीवन-दर्शन को उन्नत एवं उदात्त बनाता है। आलोचना में भी यही कार्य निहित है।

www.ignited.in

"आलोचना का सिद्वान्त मूल्य और संप्रेषण क्षमता रूपी दो खंभों पर स्थित है। लेकिन सर्जक और आलोचक की मौलिक प्रतिभा में अंतर होता है। सर्जक "कारयित्री प्रतिभा" से संपन्न है तो समीक्षक "भावयित्री प्रतिभा" से संपन्न है। एक में हृदय-पक्ष और दूसरे से बुद्धि-पक्ष की प्रधानता है। फिर भी "आलोचक पुरानी कृतियों को अंतर्विरोधों के साथ जब नये रूप पेश करता है तब वे आलोचक कंज्यूमर नहीं होता है बल्कि एक अर्थ में वो प्रोड्यूसर होता है, उत्पादक होता है। हमारा निष्कर्ष है कि आलोचना कविता, कहानी, उपन्यास इत्यादि की तरह पूर्ण रूप से सृजनात्मक नहीं है। पर वह एकदम सृजनात्मकता से मुक्त भी नहीं है।

सृजन और लेखक का परिवेशः-

साहित्य जीवन की विशिष्ट अभिव्यक्ति है। जीवन में घटित होने वाली मार्मिक घटनाओं का संवेदनात्मक चित्रण साहित्यकार अपनी रचनाओं के जरिए करता है। वह व्यक्ति के जीवन की जानकारी देने के साथ समाज की भी जानकारी देता है। सृजन-प्रक्रिया जीवन-प्रक्रिया से अलग नहीं है। समूचे सृजन में जीवन-प्रक्रिया प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उलझी रहती है। "रचना केवल अन्तश्चेतना की स्वतंत्र-भाव संयोगी प्रक्रिया नहीं है, वह संपूर्ण जीवनेच्छा का ही एक प्रकार, जीवन की प्रक्रिया है और जीवन केवल एक व्यक्ति की अपनी-निजी स्वच्छंद-निरपेक्ष चेष्टा नहीं है, उसको नियमित और शासित करने वाले बहुत से बाहरी और सामाजिक कारण, आर्थिक और भौतिक शक्तियाँ हैं। अतः उसके मूल्य भी परिवेश और व्यवस्था और वर्ग के मूल्यों से कटकर नहीं हो सकते। सृजन के मूल में संवेदना है। संवेदना को स्थापित करने में परिवेश की भूमिका अद्वितीय है। संवेदना और परिवेश की संश्लिष्टता से महत्वपूर्ण कृतियाँ बनती है। "सृजन-प्रक्रिया के भीतर से फूट पड़ने वाली रचना का एक सिरा आत्म से जुड़ा रहता है, दूसरी ओर परिस्थिति से।" सृजन-प्रक्रिया के दौरान आत्म और परिस्थिति परस्पर गहराती रहती है और उनमें एक खास संबंध और संतुलन सधता रहता है। अच्छे साहित्य की यही खासियत है। इसीसे लेखन कला का दर्जा पाता है और समाज के लिए उपयोगी और प्रासंगिक बनता है। संवेदना और परिस्थिति की मिलावट के सृजन में कई विचारधाराएँ भी आती हैं।

धर्मवीर भारती की जीवन – परिचयः-

भारती का जन्म 24 दिसम्बर 1926 में इलाहाबाद के अतरसुइया मुहल्ले में हुआ। पिता का नाम चिरंजीवलाल वर्मा और माता का नाम चंदादेवी था। उनके पिता ने बर्मा में कुछ दिन नौकरी और ठेकेदारी की थी। वहाँ से लौटकर पहले मिजीपुर और बाद में स्थायी रूप से इलाहाबाद में बस गये।

धर्मवीर भारती की माँ आर्यसमाजी थी। माँ ने उन पर आर्यसमाजी संस्कार डालने का प्रयास किया है। इसका जिक्र करते हुए भारती ने लिखा है – "माँ आर्यसमाजी है। इन मेलों-ठेलों ने देश का नाश किया। अतः उन्हें इसमें दिलचस्पी नहीं। बगल वाले के घर की जीजी का में लाडला था।" उनके ठाकुरजी के लिए स्कूल के अहाते से कनेर और मधुमालती फूल लाने से लेकर दोपहर को चिल्लाकर राधेश्याम की रामायण गाना मेरा रोज़ का कार्यक्रम था। भारती की माँ झलक उनकी 'यह मेरे लिए नहीं' कहानी में मिलती है।"

पूर्णता की तलाश

भारती के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है पूर्णत्व की खोज। उन्हीं के शब्दों में – "मैं इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जीता हुआ एक सामान्य मनुष्य हूँ और मैं अपना भविष्य जानना चहता हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी अपनी नियति क्या है। मैं एक सार्थक मनुष्य हूँ, अपना अर्थ खोजता हुआ, अपनी पद्धति खोजता हुआ, अपनी मर्यादा खोजता हुआ।पूर्णता की सबसे बड़ी शर्त आत्म-साक्षात्कार है। मानवमूल्यों में अटल आस्था ही इसका मार्ग है। बचपन की परिस्थितियों के दबाव से भारती ने मनुष्य के रूप में अपने अस्तित्व और सार्थकता की खोज शुरू की। वे लिखते है – "मेरे माँ-पिता बचपन से ही कहा करते थे कि ये लड़का निरा निकम्मा और फालतु है। मेरे भाई-बहन भी कहते कि मैं अपदार्थ हूँ, मेरा भविष्य अन्धकारमय है, स्कूल के छात्र-शिक्षक भी यही कहते, जब यूनिवर्सिटी में गया, वही-वही बातें, वही लांछन। जब एम.ए. पास किया तो यह जानने की तीखी चाह जगी मन में कि मैं कोन हूँ, क्या हूँ, अपने को जानने की अनहद कोशिश की मैंने।" इस खोज के परिणामस्वरूप उनकी समस्त कृतियाँ मूल्यात्मक बन पड़ी है।

साहित्य की समीक्षा

डॉ. धर्मवीर भारती प्रतिभा संपन्न कवि, कथाकार, विचारक एवं गद्यकार के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने साहित्य की प्रायः सभी विधाओं पर सफलता हासिल की है, तो भी वे मूलतः कवि हैं। कविता के माध्यम से भारती ने आज की संघर्षपूर्ण जिन्दगी को चित्रित किया है और जीवन के अर्थ को समझाने का प्रयास किया है। भारती और कविता के संबंध को सूचित करते हुए श्री अज्ञेय लिखते हैं – "कविता

भारती के लिए शान्ति की छाया और विश्वास की आवाज़ रही है।"

कविता

सं. इन्द्रनाथ (2013) धर्मवीर भारती की काव्य-यात्रा मुख्यतः दूसरा सप्तक से प्रारंभ हुई। उनकी प्रारंभिक कविताएँ छायावाद की सी थोड़ी मांसलता या उन्मुक्त रूपोपासना से युक्त होने पर भी अभिव्यंजना प्रणाली नवीन हैं। भारती के काव्य-ग्रन्थ हैं – "ठंडा लोहा", "अंधायुग", "कनुप्रिया" और "सात गीत वर्ष"। इनके अतिरिक्त "देशान्तर" नाम से उन्होंने कुछ विदेशी कविताओं का हिन्दी में अनुवाद भी किया है। उनकी कविताओं में रूपासक्ति, प्रेम की स्थूल और उदात्त अभिव्यक्ति, प्रकृति की आकर्षक छवियाँ आदि के साथ युग-सत्य और समसामयिक चिंतन भी दिखाई पड़ते हैं।

पश्यन्ती

डॉ. रमेशचन्द्र लवानिय (2014) सन् 1969 ई. में प्रकाशिय भारती का निबन्ध संग्रह है "पश्चन्ती"। सत्रह निबन्धों के इस संकलन को 'आत्मकथ्य', 'व्यक्तित्व और कृतित्व', 'सर्वथा निजी पश्चन्ती इतिहास, सर्वेक्षण, युगबोध, चिकनी सतहें बहते आन्दोलन जैसे सात उपशीर्षकों में विभाजित किया गया है। इनमें लेखक ने विविध समस्याओं, जैसे भाषा संबंधी, साहित्य संबंधी और राष्ट्रीयता से संबन्धित, का विश्लेषण किया है।

'आत्मकथ्य' शीर्षक के अन्तर्गत दो निबन्ध हैं – 'नवलेखन माध्यम में कुछ स्नैपशॉट्स और एक घुणा अनेक आयाम'। भारती के ही शब्दों में इनमें "मैं ने अमुक कृति क्यों लिखी कब लिखी उसके द्वारा नवलेखन का कैन-सा पक्ष उभरा, क्या उसने कोई मान स्थापित किये ये सवाल दरपेश हैं। व्यक्तित्व और कृतित्व शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले तीन निबन्धों में प्रथम 'जलौधमैग्ना सचराचरा धरा' तो हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास का विश्लेषण है। दूसरा निबन्ध 'मध्यवर्ग का सैलाब और बूढ़ा मछेरा' अमृतलाल नागर की रचना 'अमृत और विष' "मनुष्य की क्षुद्रताओं, कमजोरियों, असंगतियों, लोभ, लालसा और आवेश की वृत्तियों का बहुत खुला और साहसपूर्ण चित्रण करने वाले कहानीकार मोपासाँ की कहानी 'धागे का टुकडा' को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है।

रामदरश मिश्र नेशनल (2015) इन निबन्धों में भारती एक समीक्षक से भी अधिक एक सहृदय पाठक के रूप में हमारे सामने आते हैं। क्योंकि "बाणभट्ट की आत्मकथा" जैसी कृतियों की समीक्षा करते समय भारती द्विवेदीजी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने में व्यग्र है। लेकिन यह तो भारती के व्यक्तित्व की ऊँचाई का निदर्शन है कि हिन्दी के समर्थक और रोमानी साहित्यकार होने के बावजूद मोपासाँ जैसे यथार्थवादी लेखक को भी वे मान्यता देते हैं। "पाश्यन्ती के आत्मकथ्य" उपशीर्षक के अन्तर्गत आनेवाले निबन्धों के संबन्ध में धनंजय वर्मा का कथन है कि "नवलेखन के संबन्ध में भी भारती का चिन्तन 'पश्यन्ती' केवल कुछ परिस्थितियों को स्वीकार करके चलता है, उनके भीतर से उभरने वाले संबंन्धों को, उन संबन्धों के आर्थिक और भौतिक आधार और उसकी द्ववद्वात्मकता को नजर अन्दाज कर जाता है। फिर भी पश्यन्ती का आत्मकथ्य भारती के रचना-संसार की परिधिरेखा को स्पष्ट करने के लिहाज से महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य

- प्रस्तुत खंड की पहली इकाई में हिन्दी साहित्य के इतिहास का अध्ययन किया जाएगा।
- इसके अतिरिक्त हिन्दी साहित्य का काल विभाजन नामकरण पर विस्तृत चर्चा इस अध्याय में की गयी है।
- काल विभाजन और नामकरण के संबंध में विभिन्न विद्वानों और आचार्यों के मत भी। इस अध्याय में दिये गये हैं।
- ताकि इस इकाई का अध्ययन कर विद्यार्थी बोध प्रश्नों का उत्तर आसानी से प्राप्त कर सकेंगे।

कार्य प्रणाली

धर्मवीर भारती प्रयोगशील नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। वे सप्तक परंपरा में "दूसरा सप्तक" के कवि हैं। अपने आस-पास की दुनिया के चित्रण की अपेक्षा भारती निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति अधिक करते है। डॉ. अरूण कुमार लिखतें हैं – "नई कविता के स्वरूप-गठन में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। "सात गीत वर्ष" के पूर्व उनकी कविताओं में कौशोर्य की कोमल कल्पनाएँ हैं और जन-सामीप्य प्राप्त करने का विरल इच्छा थी। उसके बाद की कविताओं में राग का सरस स्वर है। बीच की कविताएँ विराग की नहीं वरन् विद्रोह मन की है उनकी संपूर्ण रचनाएँ उनके सतरंगे स्वप्नों को उजागर करती है। वस्तुतः धर्मवीर-भारती की कविता में नयी कविता के विकास के सभी पंडावों की छाप हैं।

डेटा विश्लेषण

धर्मवीर भारती की नाट्यात्मक रचना है- "अन्धायुग"। उनका "नदी प्यासी थी" शीर्षक एक एकांकी संकलन भी है। "अन्धायुग" कविता के माध्यम से प्रस्तुत एक नाटक है जिसे गीति-नाट्य माना जाता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। "अन्धायुग" के प्रकाशन के बाद ऐसी अनेक कृतियाँ आयी हैं - जैसे अग्निलीक भारतभूषण अग्रवाल, सूखा सरोवर लक्ष्मीनारायण लाल संशय की एक रात, नरेश मेहता एक कंठ विषपायी, दुष्यंत कुमार।

अन्धायुग

'अन्धायुग' का रचनाकाल 1954 है। यह कृति भारती की विशेष मानसिक अवस्था के एक विशिष्ट क्षण की अनुभूति का परिणाम है। उन्हीं के शब्दों में "अन्धायुग" कदापि ने लिखा जाता यदि उसका लिखना - न लिखना मेरे बस की बात रह गई होती। इस कृति का पूरा जटिल वितान जब मेरे अन्तर में उभरा तो मैं असमंजय में पड़ गया। थोड़ा डर भी लगा। लगा कि इस अभिशप्त भूमि पर एक कदम भी रक्खा कि फिर बच कर नहीं लौटूंगा। ऐसी निरासपूर्ण मानसिकता के रूपायन में रचनाकाल का प्रभाव सर्वप्रमुख है।

उपसंहार

डॉ. धर्मवीर भारती हिन्दी के जाने-माने साहित्यकार हैं। उन्होंने साहित्य की समस्त विधाओं में मानवजीवन की जीवंत समस्याएँ अंकित की है। समस्याएँ सामाजिक और वैयक्तिक होती हैं। भारती ने इन दोनोंका चित्रण किया है। उनकी अधिकांश लघु कविताएँ, "चाँद और टूटे हुए लोग" संकलन की कुछ कहानियाँ, "गुनाहों का देवता" उपन्यास और "नदी प्यासी थी" संकलन के कुछ एकांकी वैयक्तिक समस्याओं और पीड़ाओं से युक्त हैं तो कुछ कविताएँ, अधिकांश कहानियाँ, "सूरज का सातवाँ घोड़ा" उपन्यास, "आवाज का नीलाम" जैसे एकांकी और "अंधायुग" सामाजिक समस्याओं से संपृक्त हैं। इसका मतलब यह नहीं कि भारती ने व्यक्ति और समाज की समस्याओं को अलग-अलग खानों में बाँट दिया है। "कनुप्रिया" में उन्होंने इसका स्पष्ट और सुन्दर समन्वय किया है। "कनुप्रिया" में राधा का दुख केवल राधा ही का नहीं वरन् इतिहास-निर्माण में अकेली पड़ जाने वाली "राधाओं" का दुख भी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. धर्मवीर भारती व्यक्ति और – डॉ. पुष्पा वास्कर साहित्यकार आलका प्रकाशन, किदवई नगर, कानपुर-11 प्रथम संस्करण 1987.
2. धर्मवीर भारती उपन्यास – कैलाश जोशी साहित्य चिन्मय प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-3 नवीन संस्करण 1976-1977.
3. धर्मवीर भारती साहित्य के – डॉ. हुकुमचन्द राजपाल विविध आयाम वि. भू. प्रकाशन, साहिबाबाद-201005 संस्करण 1986.
4. धर्मवीर भारती और कमलेश्वर- प्रो. कृष्ण नारायण वशिष्ट कमलेश की कहानियों का तुलनात्मक-अध्ययन प्रथम संस्करण, 1981. बुक-सैण्टर, दलपत स्ट्रीट, मथुर-1
5. धर्मवीर भारती का साहित्य डॉ. चन्द्रभानु सीताराम सोनवणे सृजन के विविध रंग पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी,जयपुर-3 प्रथम संस्करण 1979.
6. नया सृजन नया बोध डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल राजेश प्रकाशन, कृष्ण नगर, दिल्ली प्रथम संस्करण 1974.
7. नयी कविता नये कवि विश्वंभर मानव लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-1, द्वितीय संस्करण 1968.
8. नयी कविता कथ्य एवं विमर्श- डॉ. अरूण कुमार चित्रलेखा प्रकाशन, अलोपी बाग, इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1988.
9. नयी कविता आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी दि मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1976.
10. नयी कविता विलायती संदर्भ जगदीश कुमार सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-7 प्रथम संस्करण 1976.

Corresponding Author

Sunil Kumar*

Research Scholar, Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu, Rajasthan